नाटक कक्ष

क्या खोया क्या पाइया ?

अर्पित जैन, खानियाँधाना(शाखी तृतीय वर्ष)

(प्रथम दृश्य)

(सोनू का अपनी दुकान से थका-हारा झुंझलाते हुए आना)

सोनू (अपने पिता से):- रोटियाँ बातें बनाने से नहीं मिलतीं। खून-पसीना एक करना पड़ता है, खैर आप क्या समझेंगे, जिन्होंने अपना सारा जीवन सुनने-सुनाने में ही गवाँ दिया, वो भला! मेहनत की कीमत क्या समझे?

पिता:- बेटा शांत रहो, धैर्य रखो परिणाम क्यों बिगाड़ते हो; होगा तो वही जो केवली ने देखा है।

सोनू:- क्या केवली हमारा बुरा ही बुरा देखते हैं? 20 साल हो गए कहते-कहते। होगा तो वही जो केवली ने देखा है...

पिता:- उनके हाथ में भी कहाँ है बेटा! वे तो मात्र जानते हैं, कर तो वे भी नहीं सकते।

सोनू:- आपसे तो बात करना पत्थर पे सर मारने जैसा है।

(तभी पीछे से छोटू आता है)

छोटू:- जय जिनेंद्र सभी को और क्या चल रहा है?

सोनू:- कुछ नहीं! वही रोज की खिट-पिट; मेरी बात इन्हें समझ में नहीं आती, इनकी बात तो वैसे ही किसी को समझ नहीं आती!!!

सोनू:- तुम इनकी छोड़ो, तुम अपने हाल बताओ।

छोटू:- सब ठीक है भैया! मुझे आप दोंनो से एक जरूरी बात करनी है।

सोनू:- बोलो!

छोटू:- भैया मेरे बोर्ड में 93% बने हैं, अब आगे क्या करना है?

सोनू:- (छोटू से) अरे! अब आगे क्या? तुम्हारे तो इतने अच्छे मार्क्स आए हैं, तुम्हारी इच्छा जो करना हो करो, पर तुम्हारे पास चार ऑप्शन हैं; C.A., इंजीनियर, डॉक्टर, I.A.S.

(पिता अत्यन्त मंद स्वर में बोले बेटा शाखी भी कर सकते हैं।)

सोनू:- (पिता से) (बहुत गुस्से-से) क्या इरादा है आपका? अपने साथ इसकी जिंदगी भी बर्बाद करना चाहते हो क्या?

पिता:- क्या कमी है हमारे पास? सब कुछ तो है; सुख है, शांति है और दो वक्त की रोटी मिल जाती है।

सोनू:- दो वक्त की रोटी तो जानवरों को भी मिल जाती है। समाज में इज्जत हो, चार लोग जाने तब तो कोई बात है।

(छोटू मन ही मन विचार करता है कि ये दोनों अपनी-अपनी जगह सही हैं, अब मुझे निर्णय करना है कि मुझे आगे क्या करना है?)

(द्वितीय दृश्य - इंद्र की सभा)

इन्द्र-चित्रगुप्त संवाद

न्यूज एंकर:- आज की ताजा खबर स्वर्ग लोक में जनसंख्या में हुई चौगुनी वृद्धि, नारकियों को नारकी न मिलने की वजह से हुआ सुख का अनुभव। वे महाभारत की जगह रक्षाबंधन मनाने पर उतर आए हैं। यदि इसी तरह से जनसंख्या में वृद्धि होती रही तो स्वर्ग लोक में अकाल की संभावना, जल्द ही अमृत के कुए नहीं खोदे गए तो सूखा पड़ने की पूरी-पूरी आशंका...। नमस्कार! मिलते हैं ब्रेक के बाद...

विश्वकर्मा:- भगवन्! अब हमारा क्या होगा अमृत के बिना? (विश्वकर्मा अपनी पत्नि को फोन करता है) अरे! भाग्यवान पड़ोसी को हमारे कुए से अमृत मत लेने देना, स्वर्ग लोक पर अकाल पड़ने वाला है। भाग्यवान कुओं की निगरानी के लिए 4 ऐरावत हाथी छोड़ दिये जाएँ।

कुबेर:- महाराज हमारे राज-कोश में जन-संख्या के बढ़ने से आवास व्यवस्था में 1 लाख करोड़ dollar की दर से कमी आई है, जो पिछले साल से चार गुना ज्यादा है, जल्द ही कुछ करना पड़ेगा।

इन्द्र:- "Why are you so tense चित्रु give them some fans." चित्रगुप्त! यम ब्रो को फोन लगाया जाए।

आप जिनसे संपर्क करना चाहते हैं, वे अभी पिकनिक में जलसा करने में व्यस्त हैं, कृपया दुबारा प्रयास न करें।

इन्द्र:- पता लगाया जाय स्वर्ग में population growth का कारण क्या है?

चित्रगुप्त:- My lord you don't believe me.

इन्द्र:- But what!

चित्रगुप्त:- ये सभी एक ही जगह से आ रहे हैं, जयपुर...।

इन्द्र:- How this is possible? हमने visa तो पूरे World को दिया था। Don't worry, all सभासदों! just chill, हम मनुष्य के स्वभाव को जानते हैं; लालच, स्वार्थ, ऐश्वर्य, मान ने उसे इसतरह जकड़ रखा है, जिसके कारण उसकी आत्मा कहाँ मर रही है, उसे भान ही नहीं।

इन्द्र:- चित्रगुप्त! हमारे कुशल गुप्तचरों को मनुष्य-लोक में भेजा जाए और जन-संख्या वृद्धि का कारण पता लगाया जाए।

(तृतीय दृश्य)

संचालक:- भवितव्य का योग ऐसा बना कि छोटू भी पिता से सहमत होकर बड़े-भाई का विरोध कर शास्त्री करने श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महविद्यालय में चला गया।

पाँच साल बाद...

(छोटू रास्ते से गुजरता हुआ तभी)

छोटू :- (वृद्ध से) जय जिनेन्द्र दादा जी...

समाज का एक वृद्ध:- बेटे! तुम्हारी शास्त्री तो हो गयी, अब आगे क्या विचार है?

छोटू:- जैन दर्शन में पठन-पाठन, शोध आदि का कार्य करना है।

समाज का एक वृद्ध:- वो सब तो ठीक है, पर तुम्हें अपनी आजिविका, अपने परिवार के बारे में भी तो सोचना होगा।

छोटू:- परिवार वालो का क्या? वो तो अपनी स्वयं की व्यवस्था लेकर आए हैं।

दूसरा वृद्ध:- देखो पंडित जी! बुरी मत मानियो, जे सब तो शास्त्रन की बातें आएँ, असल में तो जॉन के पास पैसा, वोई करे हईसा।

छोटू:- आप बड़े हैं, इसलिए ज्यादा कुछ तो नहीं, पर जैन शास्त्रों की बाते ठीक भी है और सही भी और मुझे उन पर पूरा विश्वास है।

(छोटू एकांत में जाकर विचार करता है...)

(मुझे यह नहीं पता है कि मुझे उन पर क्यों क्रोध आया; क्या यह मेरे अहंकार पर चोट थी? या फिर तत्त्वज्ञान की अप्रभावना सुनकर ऐसा हुआ?)

जगत प्रसिद्ध संपदा हो, या सिंहसान का ताज।
दो रोटी हो भूख मिटाने, हो पीने को छाछ।।

(दोस्त और छोटू का संवाद)

दोस्त:- हाँ! भाई छोटू कैसी कट रही है, जॉब-वोब तो है न, कभी-कभी तो मुझे तुमपे दया आती है।

ना होटल में खाना, ना सिनेमा जाना।
ना लड़की घुमाना, बस बाते बगराना।।

क्या यार! पता नहीं वो कौन-सी मनहूस घड़ी थी, जब तुमसे दोस्ती करी, तुम्हारे कारण मेरी भी जिंदगी नीरस हो गई।

छोटू:- दया! दया तुम्हें मुझ पर नहीं, मुझे तुम पर आनी चाहिए। तुम्हारी सोच पे आनी चाहिये, तुम्हें तो अभी दोस्ती की पहचान ही नहीं है।

(छोटू एकांत में विचार करता है...)

क्या मैं कहीं अपने आप से भाग तो नहीं रहा? आज ऐसा क्या हुआ? क्या हुआ की मुझे अपने गुरु की बातें गलत-सी लगने लगी। आज क्यों मुझे guilt feel हो रहा? इतनी ग्लानि महसूस हो रही, जैसे मैंने कोई अपराध किया हो। ऐसा आखिर! क्या हुआ की आज मैं दया का पात्र बन गया? क्यों मुझे भी शास्त्रों की बातें खोखली प्रतीत हुई....?

(पापा की गोद में सिर रखकर)

पिता:- क्या हुआ बेटा! आज इस बूढ़े की याद कैसे आ गई? (खाँसता हुआ।)

छोटू:- पता नहीं! आज बहुत अकेला महसूस कर रहा हूँ। ऐसा लग रहा है, मानो कुछ तो गलत हो रहा है।

पता नहीं दुनिया आखिर चाहती क्या है?

पिता:- देखो बेटा! दुनिया तो गोल है, उसका न कोई मोल है, मतलब बेटा! यहाँ तो जो दिखेगा वो ही बिकेगा, लोक में तो ऐसा ही उसूल है कि सच को झूठ, झूठ को सच कहा जाता है।

बेटा! अब तुम पर निर्भर करता है कि तुम्हें दुनिया को खुश रखना है कि खुद को खुश करना है...।

बेटा:- पिता जी! आज न जाने, क्यों मैं निराशा और बोझ के तले बहुत घुटन महसूस कर रहा हूँ मानो जैसे आसमान आज मुझसे चीख-चीख कर पूछ रहा हो कि मेरा अस्तित्व क्या है? मेरी जीवन की सार्थकता क्या है? आज मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि मुझे स्मारक भेजने का निर्णय, क्या परिस्थिति जन्य था या आपके धैर्य व संतोष का परिणाम...?

पिता:- बेटा! तुम ऐसा मत समझना कि मैं तुम्हें इंजीनियर, C.A., डॉक्टर या प्रशानिक सेवक बनाने में समर्थ नहीं था; परंतु मैं जानता था कि यह भौतिकवाद तुम्हारी आंतरिक शांति को हर लेता, तुम्हें अंधा बना देता।

बेटा! आज तुमने जो समाज वालों को, अपने दोस्तों को उत्तर दिये, वो तुमसे कहलवाया नहीं जा रहा था। वो तुम्हारे अंतरंग की आवाज थी। तुम्हारे तत्त्वज्ञान का ही बल था।

(इंद्र सभा का दृश्य)

इंद्र:- (चित्रगुप्त से) देखा चित्रगुप्त! ये कोई समस्या ही नहीं थी,

यही तो स्वर्गलोक में आने का एकमात्र उपाय है। यदि ये लोग स्वर्ग में नहीं आयेंगे तो क्या सप्त-व्यसनी आयेंगे?

चित्रगुप्त:- महाराज! इतना ही नहीं, ये लोग स्वर्ग भी आयेंगे और मोक्ष भी जायेंगे।

संचालक:- इस लघु-नाटिका में यह दिखाना हमारा उद्देश्य नहीं है कि एक शास्त्री विद्वान आगे कार्यक्षेत्र में क्या कर सकता है या क्या नहीं कर सकता? इस लघु नाटिका के माध्यम से हम यह दिखाना चाहते हैं कि उतार-चड़ाव तो मानव जीवन का प्राथमिक अंग है; परन्तु तत्वज्ञान का बल उसे निराशा से नहीं घिरने देगा। उसके चहरे पर शल्य की रेखा नहीं खींचने देगा। इसी का परिणाम है कि छोटू सब कुछ खोकर भी कुछ नहीं खोएगा।

इस लघु-नाटिका में पिता का धैर्य और आत्मसंतोष हम सभी के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है।